Hanuman Chalisa Hindi

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ ०१ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥ ०२ ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ०३ ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥ ०४ ॥

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥ ०५ ॥

संकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥ ०६ ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥ ०७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ ०८ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ०९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥ १० ॥

लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥ ११ ॥

रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १२ ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।

तुम रच्छक काहू को डर ना ॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥ २३ ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

संकट तें हनुमान छुडावे ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोहि अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारो जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेही सर्ब सुख करई ॥ ३५ ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरे हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥ ३७ ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मुर्ति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ जय-घोष ॥

बोल बजरंगबली की जय ।
पवन पुत्र हनुमान की जय ॥
॥ जय श्री राम ॥

Hanuman Chalisa Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

मैं गुरु के चरण कमलों से अपने हृदय के दर्पण को चमकाकर रघुकुल वंश के सबसे महान राजा की दिव्य प्रसिद्धि का चित्रण करता हूं, जो हमें चारों प्रयासों का फल देता है।

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

यह जानकर कि मेरे मन में बुद्धि का अभाव है, मैं 'पवनपुत्र' का स्मरण करता हूं, जो मुझे बल, बुद्धि और सभी प्रकार का ज्ञान प्रदान करके मेरे सभी दुखों और कमियों को दूर करते हैं।

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥०१॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥०२॥

ज्ञान और गुण के सागर श्री हनुमान जी की जय। वानरों में सर्वोच्च, तीनों लोकों के प्रकाशक की महिमा।
आप भगवान राम के दूत, अतुलनीय शक्ति के स्वामी, माता अंजनी के पुत्र और 'पवन पुत्र' (पवन पुत्र) के रूप में भी लोकप्रिय हैं।

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥०३॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥०४॥

महान नायक, आपके पास बिजली के बोल्ट की शक्ति है। आप बुरी बुद्धि को दूर भगाते हैं और अच्छी बुद्धि वालों के साथी हैं।
आपकी त्वचा का रंग सुनहरा है और आप सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित हैं। आपके कानों में सुंदर बालियाँ हैं और आपके बाल घुंघराले और घने हैं।

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥०५॥

संकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥०६॥

आपके हाथ में गदा और धर्म ध्वजा चमके। आपके दाहिने कंधे पर एक पवित्र धागा लिपटा हुआ है। आप वानर राजा केसरी के पुत्र और भगवान शिव के स्वरूप हैं। आपकी महिमा, आपके वैभव की कोई सीमा या अंत नहीं है। सारा ब्रह्माण्ड आपकी पूजा करता है।

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥०७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥०८॥

आप बुद्धिमानों में सबसे अधिक बुद्धिमान, गुणवान और (नैतिक रूप से) चतुर हैं। आप भगवान राम का कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। भगवान राम के आचरण और आचरण को सुनकर अत्यंत आनंद की अनुभूति होती है। भगवान राम, माता सीता और भगवान लक्ष्मण सदैव आपके हृदय में निवास करें।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥०९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥१०॥

आप सूक्ष्म रूप में माता सीता के सामने प्रकट हुए। और आपने विकराल रूप धारण करके लंका (रावण का राज्य) को जला डाला।
आपने (भीम के समान) विशाल रूप धारण करके राक्षसों का संहार किया। इस प्रकार, आपने भगवान राम के कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया।

लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥

रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

आपने जादुई जड़ी-बूटी (संजीवनी) लाकर भगवान लक्ष्मण को पुनर्जीवित कर दिया। रघुपति, भगवान राम ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कृतज्ञता से अभिभूत होकर कहा कि आप मेरे भरत के समान ही प्रिय भाई हैं।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

यह कहकर भगवान राम ने तुम्हें अपनी ओर खींचकर गले से लगा लिया। सनक जैसे ऋषि, ब्रह्मा जैसे देवता और नारद जैसे ऋषि और यहाँ तक कि हज़ार सिर वाले साँप भी आपकी महिमा गाते हैं! सनक, सनन्दन और अन्य ऋषि और महान ऋषि; ब्रह्मा – भगवान, नारद, सरस्वती – देवी माँ और साँपों के राजा आपकी महिमा गाते हैं।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥

यम, कुबेर और चारों दिशाओं के संरक्षक; कोई भी कवि या विद्वान आपकी महिमा का वर्णन नहीं कर सकता।
आपने सुग्रीव को भगवान राम से मिलवाकर और उसका मुकुट वापस दिलाकर उसकी मदद की। अतः आपने उन्हें राजत्व (राजा कहलाने की गरिमा) प्रदान किया।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥

इसी प्रकार आपकी सलाह मानकर विभीषण भी लंका का राजा बन गया।
आपने सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित सूरज को एक स्वादिष्ट लाल फल समझकर निगल लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

भगवान राम द्वारा दी गई अंगूठी को मुंह में रखकर आप बिना किसी आश्चर्य के समुद्र पार कर गए।
आपकी कृपा से संसार के सभी कठिन कार्य आसान हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२॥

आप भगवान राम के द्वार के रखवाले हैं। आपकी अनुमति के बिना कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता, इसका मतलब है कि भगवान राम के दर्शन (एक झलक पाना) केवल आपके आशीर्वाद से ही संभव है। जो आपकी शरण में आते हैं उन्हें सभी सुख-सुविधाएं मिलती हैं। जब हमारे पास आप जैसा कोई रक्षक हो, तो हमें किसी से या किसी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं है।

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

केवल आप ही अपनी महिमा का सामना कर सकते हैं। आपकी एक ही गर्जना से तीनों लोक कांपने लगते हैं।
हे महावीर! जो तेरे नाम का स्मरण करते हैं, उनके निकट भूत नहीं आते। अत: आपके नाम स्मरण मात्र से ही सब कुछ संभव हो जाता है।

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥२५॥

संकट तें हनुमान छुडावे ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

हे हनुमान! आपके नाम का स्मरण या जप करने से सभी रोग और सभी प्रकार के कष्ट नष्ट हो जाते हैं। इसलिए नियमित रूप से अपना नाम जपना बहुत जरूरी माना जाता है। जो कोई ध्यान का अभ्यास करता है या मन, वाणी और कर्म से आपकी पूजा करता है, वह सभी प्रकार की कठिनाइयों और कष्टों से मुक्त हो जाता है।

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोहि अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

भगवान राम सभी राजाओं में सबसे महान तपस्वी हैं। परंतु आप तो भगवान श्री राम के सभी कार्य करने वाले हैं।
जो कोई भी किसी लालसा या सच्ची इच्छा के साथ आपके पास आता है उसे प्रचुर मात्रा में प्रकट फल मिलता है, जो जीवन भर अक्षय रहता है।

चारो जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥३०॥

आपका वैभव चारों युगों में व्याप्त है। और तेरी महिमा सारे जगत् में प्रसिद्ध है।
आप ऋषियों के रक्षक हैं; राक्षसों का नाश करने वाला और भगवान राम का उपासक।

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

माता जानकी ने आपको योग्य लोगों को और अधिक वरदान देने का आशीर्वाद दिया है, जिसमें आप सिद्धियाँ (आठ अलग-अलग शक्तियाँ) और निधियाँ (नौ अलग-अलग प्रकार की संपत्तियाँ)

प्रदान कर सकते हैं। आप सदैव रघुपति के विनम्र और समर्पित सेवक बने रहें क्योंकि आप रामभक्ति की भावना का प्रतीक हैं।

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

जो आपकी स्तुति और नाम का गान करता है, उसे भगवान राम का साक्षात्कार होता है और वह बार-बार जन्म लेने के कष्ट से मुक्त हो जाता है। आपकी कृपा से, मृत्यु के बाद मनुष्य भगवान राम के शाश्वत घर का दौरा करेगा और उनके प्रति वफादार रहेगा।

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेही सर्ब सुख करई ॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरे हनुमत बलबीरा ॥३६॥

किसी अन्य देवता की सेवा करना आवश्यक नहीं है। हनुमान जी की सेवा से सभी सुख प्राप्त होते हैं।
जो व्यक्ति महाबली हनुमान जी का स्मरण करता है, उसके सभी संकट दूर हो जाते हैं और उसके सभी कष्ट भी समाप्त हो जाते हैं।

जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥३८॥

हे हनुमान! हे पराक्रमी भगवान, आपकी स्तुति और सम्मान करें, और हमारे सर्वोच्च गुरु के रूप में हम पर अपना अनुग्रह बढ़ाएँ।
जो व्यक्ति इस चालीसा का 100 बार जाप करता है वह सभी प्रकार की दासता से मुक्त हो जाता है और अत्यधिक आनंद प्राप्त करता है।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥४०॥

जो व्यक्ति इस हनुमान चालीसा का पाठ करता है उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। भगवान शिव स्वयं इसके साक्षी हैं।
हे भगवान हनुमान, मैं सदैव भगवान श्री राम का सेवक, भक्त बना रहूं, तुलसीदास कहते हैं। और, आप सदैव मेरे हृदय में निवास करें।

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मुर्ति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

पवनपुत्र, आप सभी दुखों का नाश करने वाले हैं। आप सफलता और भाग्य का महाकाव्य उदाहरण हैं। भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता सहित, सदैव मेरे हृदय में निवास करें।

॥ जय-घोष ॥

बोल बजरंगबली की जय ।
पवन पुत्र हनुमान की जय ॥
॥ जय श्री राम ॥